प्राप्ति कुछ विशेष प्राप्ति, विशेष समय पर ही की जा सकती है और वो समय है... अमृतवेला

जीवन में समय के संयम से सफलता सत् प्रतिशत....

ब्र.कु. जगदीशचन्द्र हसीजा

जीवन में ऊँचे लक्ष्य को हासिल करने के लिए न सिर्फ नियम और संयम की आवश्यकता होती, किन्तु उसमें नियमितता और निरंतरता भी ज़रूरी है। और उसमें भी जीवन में आध्यात्मिक ऊँचाइयों को आकार देना हो तो खुद से भी ईमानदार व वफादार रहकर ही किया जा सकता है। ब्रह्मा बाबा ने परमात्मा के आदेश और निर्देश को सत् प्रतिशत अपने जीवन में अपनाया। उसे न ही कोई परिस्थिति, न ही कोई शारीरिक बीमारी रोक पाई। उन्होंने परमात्मा के बताये गये उसूलों के साथ कोई समझौता नहीं किया।

हमने देखा है, एक बार बाबा को शुगर की मात्रा बहुत बढ़ गयी थी और ब्लड प्रेशर भी था। डॉक्टर ने कहा कि बाबा बहुत जल्दी उठते हैं, दिन में रेस्ट भी नहीं करते, आप इनको रेस्ट दिया करो, इनको रेस्ट लेने के लिए कहो। मुझे याद है, उस समय मैं मधुबन में ही था। दीदी मनमोहिनी जी और दो-चार भाई-बहनों ने मिलकर बाबा से कहा कि "बाबा, आप अमृतवेले योग में नहीं आइये। आप तो रात में देरी से सोते हैं और विश्व सेवा के बारे में सोचते रहते हैं। जब भी हम आपके कमरे में आते हैं, आप जागते रहते हैं। आप सारा दिन-रात योग तो लगाते ही हैं। इसलिए थोड़े दिनों के लिए कृपया सुबह अमृतवेले मत आइये।" बाबा ने कहा "बच्ची, तुम क्या कहती हो! अमृतवेले न उठूँ! यह कैसे हो सकता है! उस ऑलमाइटी बाबा ने हमारे लिए समय दे रखा है, उसको कैसे छोड़ूँ!" उन्होंने बाबा से फिर बहुत विनती की कि बाबा डॉक्टर कहता है कि विश्राम लेना बहुत ज़रूरी है। बाबा ने कहा, "बच्ची, किस डॉक्टर की बात सुनूँ? यह डॉक्टर कहता है कि अमृतवेला रेस्ट करो, वो सुप्रीम डॉक्टर कहता है, अमृतवेला उठकर मुझे याद करो। मैं किसकी बात मानूँ? मुझे सुप्रीम डॉक्टर की बात माननी पड़ेगी ना! इसलिए मैं अमृतवेले रेस्ट नहीं कर सकता।" ऐसे कह कर बाबा ने उनकी बात को इन्कार कर दिया। दीदी जी ने नहीं माना। उन्होंने कहा कि बाबा डॉक्टर ने बहुत कहा है इसलिए आप कम-से-कम तीन दिन मत आओ। हमारी यह बात आपको माननी ही पड़ेगी। बहुत ज़िद करने के बाद बाबा ने कहा, "अच्छा बच्ची, सोचूँगा।" जब रोज़ के मुआफिक हम अमृतवेले जाकर योग में बैठे तो बाबा भी चुपके से आकर योग में बैठ गये। देखिये, बाबा ने अपनी ज़िन्दगी में एक दिन भी अमृतवेले का योग मिस नहीं किया। कैसी भी बीमारी हो, कितनी भी उम्र हो उन्होंने ईश्वरीय नियमों का उल्लंघन नहीं किया। जो नियमों का रेग्युलर पालन करता है उसको फल प्राप्त होना ही चाहिए। नहीं प्राप्त होता हो- यह असंभव है। आप में कोई टीचिंग लाइन के होंगे। जो टीचर होता है उसकी ज़िम्मेवारियाँ क्या होती हैं वे जानते हैं। कोई विद्यार्थी कितना भी डल बुद्धि वाला हो, क्लास में रोज़ आता है, रेग्युलर है, पंक्च्युअल है तो उसको पास होना ही है। पास नहीं हुआ माना इसमें टीचर की कोई गलती है। यह देखा गया है कि विद्यार्थी कितना ही मन्दबुद्धि वाला हो अगर पढ़ाई में रेग्युलर है तो उसको पास होना ही है। अगर रोज़ अमृतवेले ठीक योग में बैठते हैं और हम पास विद् ऑनर नहीं होंगे यह सवाल पैदा हो सकता है? नहीं। पास विद् ऑनर हो ही जायेंगे। धर्मराज बाप कहता है, तुम रोज़ अमृतवेले योग करो, तुम्हारे सारे पाप दग्ध होंगे, तुम सजाओं से दूर रहोगे। हम उसके ये नियम रोज़ अनुसरण करते रहें, फिर भी हम धर्मराज की सज़ा खायें- यह हो नहीं सकता। अगर ऐसे हुआ तो इसके लिए धर्मराज ही ज़िम्मेवार है। आप धर्मराज से पूछ सकते हो कि हमारे टीचर ने कहा, रोज़ नियमित रूप से पढ़ाई करो, अमृतवेले ठीक तरह से योग करो तो तुम्हें मैं पास कर दूँगा अर्थात् पापों से मुक्त कर दूँगा। मैंने तो अपने टीचर की आज्ञा अनुसार पढ़ाई ठीक ढंग से की है, तो मुझे क्यों सज़ा देते हैं? मेरे टीचर से पूछो। लेकिन यहाँ तो टीचर के कहने के अनुसार रोज़ अमृतवेले उठते तो हैं, योग में बैठते भी हैं लेकिन ठीक रीति से योग करते नहीं। उस सर्वशक्तिवान से बुद्धियोग जोड़ते नहीं हैं तो पाप कैसे दग्ध होंगे? बाबा ने यह कहा हुआ है कि यह राजयोग है। राजयोग के कई अर्थ बाबा ने हमें बताये हैं। यह राजयोग मन का योग है। मन इन्द्रियों का राजा है। इस योग में मन इन्द्रियों को कन्ट्रोल करने लगता है। इसलिए यह योग समस्त योगों से श्रेष्ठ है। जो राजयोग सीखता है उसमें रूलिंग और कन्ट्रोलिंग पॉवर आ जाती हैं। राजा को अंग्रेजी में रूलर कहते हैं, अरबी में हुकमराम कहते हैं, हिन्दी में प्रशासक कहते हैं। राजयोगी बनकर यदि हम इन्द्रियों पर राज्य नहीं करते, मन की प्रवृत्तियों को कन्ट्रोल नहीं करते, तो हम क्या राजयोग करते हैं? राजयोग मुख्यतः क्या करता है? इन्द्रियों को अपने वश करता है, उन पर शासन चलाता है। मनुष्य को यही इन्द्रियाँ भटकाती हैं। आज मनुष्य कोई-न-कोई इन्द्रिय का गुलाम हुआ पड़ा है। इन इन्द्रियों की गुलामी से आजादी के लिए राजयोग सिखाया जाता है। इसको हमें अभी ही करना चाहिए, अभी नहीं तो कभी नहीं। हम बाबा के पास पुस्तक लिखकर ले जाते थे पास कराने के लिए। उसको देखने के बाद हमेशा यही कहते थे कि लास्ट में यह लिखो- "अभी नहीं तो कभी नहीं।" अतः राजयोग से ही हम स्वराज्य अधिकारी बन सकते हैं, वारिस बन सकते हैं और विश्व को पवित्रता, सुख, शान्ति, समृद्धि से सम्पन्न स्वर्ग बना सकते हैं।

बहल-हरियाणा। श्री अलख आश्रम के महंत विकास गिरी जी महाराज को रक्षासूत्र बांधते हुए स्थानीय सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. शकुन्तला बहन।

फाज़िल्का-पंजाब। आई.पी.एस. ऑफिसर दीपक हिलेरी को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. प्रिया बहन।

आज़मगढ़-उ.प्र.। जिलाधिकारी राजेश कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. रंजना बहन।

मैनपुरी-उ.प्र.। जिला अधिकारी महेन्द्र बहादुर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अवंती बहन।

जयपुर-दुर्गापुरा(राज.)। प्रहलाद कृष्णिया, एसीपी जयपुर को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् प्रसाद देते हुए ब्र.कु. सन्नू बहन।

चित्तौड़गढ़-राज.। महंत श्री राम जी को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. आशा बहन।

गांधीधाम-गुज.। दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट-कच्छ में ब्रह्माकुमारीज़ के भारत नगर सेवाकेन्द्र द्वारा रक्षाबंधन के अवसर पर आयोजित कार्यक्रम में दीनदयाल पोर्ट ट्रस्ट के चेयरमैन संजय के.मेहता,आई.एफ.एस. को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सरिता बहन।

ओझर-म.प्र.। क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वामी रामानंद यति जी का सेवाकेन्द्र में सम्मान करते हुए ब्र.कु. रेणुका बहन।